इस घर उस घर

मुक्ता

इस घर उस घर

कहानी

मुक्ता

इस घर उस घर

नदी में आधे डूबे हम
सौंप देंगे अपना कौमार्य...

कुछ अधूरी पंक्तियाँ बन-बनकर बिखर रही थीं। नल अचानक ही खामोश हो गया। झर-झर पानी से मन-प्राण सभी अनुप्राणित थे। अचानक ही जैसे सूखे रेगिस्तानमें में एक अकेला हरा पौधा आकाश की ओर ताक रहा हो-

आनंद...मना...
आनंद...मना...
आ...न...द...म...ना...
मोरा जोगिया...घर...आ...या...

राग मालकौस के स्वर मुखर थे।
सुर गूँज रहे थे।

मैं स्तंभित सी विपरीत उत्सव को देख रही थी। स्नानगृह में पंक्तियाँ तैर रही थीं। वातावरण पारदर्शी, जलमग्न हो उठा। मैं मंत्रमुग्ध थी। तरोताजा, साड़ी लपेट बाहर आई। वैसे स्नान का समीकरण अधूरा रह गया था। बालटी में बचे-खुचे पानी से ही शेष स्नान संपूर्ण हुआ। 'बाहर आते ही जिस महिला को सम्मुख पाया वह पूर्णत: अपरिचित थी। उसका रौद्र रूप देख, मेरे माथे की नसें तन गई! वह क्रोधित थी, बिना समय गंवाए वह अपना पूरा विष उतार देना चाहती थी। मेरे बच्चों ने उसका जीना हराम कर रखा था और इस समय वह उसके पति के रियाज में बाधा पहुँचा रहे थे। उसका वश चलता तो ऊपर का फ्लैट वह बिकने न देती। इस समय उसका मुख्य उद्देश्य मेरे बच्चों की उम्र जानना था। यह बात उसने बेचैनी से प्रकट की। मैंने शालीनता से कह दिया, ऊपर जाकर देख लीजिए। उसने मुझे भरपूर दृष्टि से देखा, कुछ ऐसे भाव से जैसे उसने अनुमति

नहीं माँगी। उसकी आँखें गहरी काली थीं, पलकें घुमावदार खूबसूरत। मैं अभी भी जलमग्न थी और उसकी मोहक आँखों में डूबने की कोशिश कर रही थी।

..ओं...बाबा, इतने बडे बच्चे! हम तो समझे नर्सरी. केजी के होंगे...छि: -छि:, कितने शर्म की बात है।..

सीढ़ी से उतरते हुए वह बड़बड़ा रही थी। उसकी विस्फारित आँखें बड़ा अजूबा देखकर लौटी थीं।

रूमानियत उड़ चुकी थी, मैं अब जमीन पर थी।

..आ... प...?...

.. हम आपके...पड़ोसी .. कहते-कहते वह सीढ़ियाँ उतरती गई।

बच्चों को पड़ोसन की हरकत नागवार गुजरी। मेरा पड़ोसन का पक्ष लेना उन्हें और भी खल गया। हफ्ते में एक बार कुछ ऐसा अप्रिय घट जाता कि बच्चे कटाक्ष कर बैठते, ..आपकी प्रिय पड़ोसन। .. अक्सर कामवालियों से होनेवाले उसके झगड़े संग्राम का रूप धारण कर लेते। बागवानी का उसे शौक है। यह उसकी बालकनी में रखे खूबसूरत गमलों से स्पष्ट था। अक्सर मैं उसे गमलों को सँवारते-पानी डालते देखा करती थी। उसके दरवाजे पर लटकी नेम प्लेट ' गौरगोपाल-गोदावरी वैश्य .. मुझे कबूतर के जोड़े जैसा आकर्षित करती। लेकिन कभी दरवाजे तक मेरे हाथ न बढ़े। उसके ऊँचे खूबसूरत शरीर में निषेध की अदृश्य छाया थी जो आँखों तक पहुँचते ही गायब हो जाती थी। लेकिन उन आँखों तक पहुँचना आसान न था। बच्चे एवं मेरे पति अनंत उसे लेकर एक अजीब-सी ग्रंथि से ग्रसित थे। पहला अनुभव उनकी चिढ़ का कारण बन चुका था। महीनों बीत चुके थे, हम बस नाममात्र के ही पड़ोसी थे। अपरिचित सन्नाटे को रागों के मधुर स्वर नित्य ही तोड़ा करते। वे पल घनिष्ठतम होते। सामने बैठ रागों में डूबने का मोह हो आता। अदभुत गायन " गायक का रेखांकन मैं मन ही मन किया करती।

गर्मियों के उचाट दिन शुरू हो चुके थे। हमने रानीखेत जाने का कार्यक्रम बनाया। सफर की थकान चीड़ के पेड़ों को छूते ही उतर गई। पेड़ों के तने में लगे चीरे, उनसे रिसता गोंद, छुटे शहर की याद ताजा करते। हम भूल जाना चाहते थे वह सब कुछ

जो शहर से जुड़ा था। बच्चे उत्साहित थे। इस एक हफ्ते में हम एक नई दुनिया बसाना चाहते थे।

सुबह सैर के बहाने मैं अन्वेषण के लिए निकली, मेरा कवि जागरूक था। छोटा-सा रानीखेत .. खूबसूरत रानीखेत। चलते-चलते मैं दूर निकल आई। आगे कोई सीधा रास्ता न था। कोई गंतव्य नहीं। चीड़ के पेड़ों से घिरी मैं जैसे इसी धरती का हिस्सा हुँ, इन्हीं पेड़ों की शाखाओं के साथ मेरे भी स्पंदन जुड़े हों। पेड़ों के झुरमुट से निकला सूरज बुजुर्गियत से भरा था। पहाड़ पर चाँद ज्यादा फबता है। वैसे लोग यहाँ सुर्योदय देखने के लिए पागल रहते हैं। सफेद भूनी रमाये पहाड़, जिसके बीच सूर्य का गोला और यह टुकड़ा धरती जिस पर में खड़ी हूँ अलग- अलग द्वीप जैसे लगे। मामने विशाल चीड़ का पेड़ पथ रोके खड़ा था। अचानक पेड़ों के बीच से जाना-पहचाना चेहरा निकल आया। कितना आत्मीय, जैसे बगल की मुँडेर से किसी ने पुकारा। मेरी पड़ोसन थी, उसके नाम से मैं परिचित थी । दो नेम प्लेट बार-बार मेरी नजरों से गुजरे हैं- कबूतर के जोड़े गौरगोपाल-गोदावरी वैश्य।

शिशु जैसी विस्फारित आँखों में आश्चर्य से अधिक आतुरता थी, .. दीदी, आप यहाँ?..

मैं भी आश्चर्यचकित थी, .. आ...प..!..

.. हाँ, मेरा तो मायका है, माँ के साथ मैं सैर के लिए निकली हूँ। ..

.. माँ... मैंने प्रणाम किया।

गोदावरी ने ठहरने का स्थान पूछा। घर मिलने, ठहरने का आग्रह किया।

माँ को पाकर मैं अभिभूत थी। घर-परिवार की बातों में समय बीत चला। मिलने का वचन देकर मैं वापस होटल लौटी।

मेरे उत्साह का प्रभाव मेरे परिवार जनों पर शून्य था। गोदावरी से परिचित होने की न चाह थी, न ललक। मुझे भी मुसीबत से दूर रहने और कीमती समय नष्ट न करने की नेक सलाह दी गई।

लगभग छ: माह से महज कुछ सीढ़ियों की दूरी होते हुए भी तन्वंगी गोदावरी का